बोलती तन्हाइयाँ
सुधा अंज़ुम

सुधा जैन अंजुम

मूल्य : रु० 50-00

बोलती तन्हाइयां

सुधा जैन अंजुम

Publisher :-

Sudha Jain "Anjum"

48 Jain Bazar,

JAMMU TAWI-180 001.

"इस बात से तस्सली रहेगी तमाम उम्र"
मांगा था जितना आपसे उससे सिवा दिया

अपने महबूब 'पर्जन्य' के नाम

पेश लफ़्ज़

जम्मू की अदबी रवायात बहुत क़दीम है और आज इन ही रवायात की बदौलत जम्मू मुख़्तलिफ ज़ुबानों और इन ज़ुबानों के अदब का एक गहवारा बना हुआ है। आज जम्मू के तूलो अरज़ में मयारी शायरी और मयारी नसर की तख़लीक कई ज़ुबानों में हो रही है, जिनमें डोगरी, उर्दू, पंजाबी, कश्मीरी, गुजरी, पहाड़ी और हिन्दी के अलावा बअज़ और ज़ुबानें भी हैं। ग़ालिबन हिन्दोस्तान भर में जम्मू का इलाका महदूदे चन्द इलाकों में है। यहां ये एक यकबख़्त मुख्तलिफ़ ज़ुबाने और उनका अदब फल फूल रहा है। और इनके सामने एक ताबनाक मुस्तक़बिल है।

जम्मु के उर्दू शोअरा की अपनी एक तारीख़ है जिसका ज़िक्र डा० ज़हूरउलदीन ने अपने डीलिट के अंग्रेजी थीसिज़ में तफ़सील के साथ किया है। हिन्दोस्तान भर में उर्दु की मक़बूलियत के बाईस जम्मू में भी उर्दु शायरी और उर्दू नसर की तारीख़ में रोज़ ब रोज इज़ाफ़ा हो रहा है जहां तक शोअरा का तअल्लुक है इस इज़ाफे में जदीद-तरीन नाम सुधा अंजुम का है।

सुधा अंजुम अगरचे जम्मू की शायरा हैं और मैं भी 1977 से जम्मू में मक़ीम हूं, लेकिन अभी थोड़ी मुद्दत क़बल तक मैं इनके नाम और क्लाम से क़तई तौर पर नावाकिफ़ था। कोई एक माह की बात है रेडियो कश्मीर जम्मू के ज़ेरे-एहेतमाम एक आल इण्डिया मुशायरा मुनअक़द हुआ जिसमें मुझे सुधा अंजुम का क्लाम सुनने का मौका मिला। सुधा अंजुम ने मुशायरे में जो गज़लें पढ़ीं उन पर उन्हें बहुत दाद मिली लेकिन मैं बिलअमूम मुशायरे की दाद को एक वक्ती तहसीन से ज्यादा अहमियत नहीं देता। मैं पूरी तवज्जोह से मुशायरे में शोअरा का क्लाम सुनता हूं और सामाइअन की दाद से बेनियाज़ होकर ये देखता हूं कि ये शेर मेरे वज़दान को मुतासिर कर रहा है या नहीं, और अगर कर रहा है तो क्या ये तासुर आरज़ी हैं या कुछ (देर पा) खासी देर तक रहने वाला है। सुधा अंजुम का क्लाम सुन कर

मैंने महसूस किया कि उनकी शायरी में रवायात के एहतराम के साथ ही साथ इज़हार के लिए पहलू की भी निशानदेई हो रही है। जाहिर है कि कम उम्र में जिन्दगी के तज़ुरबात की वो अफ़रात नहीं होती जो आगे चलकर किसी शायर या शायरा की जिन्दगी में रूहनुमां होते हैं लेकिन सुधा अंजुम के सोच विचार और पैरायै इज़हार में वो इमकानात बखूबी नज़र आ रहे हैं जो वक्त गुजरने के साथ ही साथ असरी अदब में एक अहमियत हासिल करते चले जाएंगे।

सुधा की शायरी ग़ज़ल की शायरी है और इस शायरी पर दाग़ असकूल की ग़ज़ल गोई का ख़ासा असर नज़र आता है। लेकिन दाग़ असकूल की ग़ज़ल अक्सर व बेशतर रिन्दी और हवसनाकी के दामन में जाकर पनाह लेती है इसके बरअक्स सुधा अंजुम की शायरी इस ऐब से यक्सर खाली है। सुधा अंजुम का तख़य्युल एक हिन्दुस्तानी औरत का तख़य्युल है और पाकीज़गी का एहसास इस तख़य्युल की मैराज है। हमारे उसातज्हा ने ग़ज़ल के तार्रूफ़ में हमें ये बताया है कि इसके मायने हैं "औरत से बातचीत करना" और औरतों के साथ बातचीत क्यूंकि नर्म व शीरीं ज़ुबान में की जाती है इसलिए गज़ल के लहज़े का नरम व शीरीं होना जरूरी है। शमस क़ैस राज़ी ने गज़ल के ज़िक्र में कहा है कि ये गज़ाल यानी हिरण की उस आवाज को कहते हैं जो उस वक्त उसके गले से निकलती है जब शिकारी कुत्ते उसका तुआकब करते हैं गोया ईरान के आलम नक्काद शम्स क़ैस राज़ी हमें ये बताना चाहते हैं कि गज़ल में दर्द व गदाज़ का होना जरूरी है लेकिन मैं ये महसूस करता हूं कि शीरीं लबो-लहज़ा सिर्फ़ गज़ल ही के लिए नहीं बल्कि शायरी की दीगर असनाफ़ के लिए भी जरूरी होता है और जहां तक दर्द व गदाज़ का तअल्लुक़ है उसे सिर्फ गज़ल ही के लिए क्यूं मख़सूस कर दिया जाए। दर्द व गदाज़ तो सारी शायरी के लिए बुनियादी खुसूसियत है जिसमें मसनबी भी आ जाती है और मसदद्स भी और बअज़ और असनाफ़-ए-सुखन भी। और अब तो हमारी गज़ल उस मक़ाम तक आ गई है कि इसमें मसाइल-ए-हयात के अनगिनत पहलू जिनमें तारीख़ व सियासत भी शामिल है और वो भी जिसे हम असरी कहते हैं खूबसूरती के साथ समोए हुए मिलते

हैं इसलिए अब गज़ल की तारीफ़ को उस पुराने मफ़हूम में क़ैद करने की बजाय उसकी हैयत तक महदूद रखना ही मुनासिब होगा जैसे मुसदद्स या मसनवी की तारीफ़ को हम उनकी हैयत तक महदूद रखते हैं।

इस तौजीह के बाद जब हम सुधा अंजुम की शायरी पर नज़र डालते हैं तो हमें इसमें ग़मे जानां की झलकियां भी नज़र आती है और ग़मे दौरां की भी। अस्री आगही भी और मावराइयत भी, ग़मे ज़ात भी और ग़मे कायनात भी

हज़ार दूर हों वो ये क़रीब लाएगी
वफ़ा की डोर है हरग़िज न टूट पाएगी
ये प्यार एक समन्दर है रुक सकेगा कहां
ये कोई नदी नहीं है जो सूख जाएगी
फज़ाओं में कई नग़मात गूंज उट्ठेंगे
क़दम-क़दम पे तेरी आवाज़ गुनगुनाएगी

अपने आप पे हमको अक्सर उनका गुमां ही गुजरेगा
ये आलम भी होगा उनको हम हर शय में पाएंगे

मुस्करा देते हैं ए 'अंजुम' हम अपने हाल पर
अपना हर अंदाज़ कितना शायराना हो गया

मुझे मिले थे जो ग़म कितने खूबसूरत थे
मगर हयात को ये पैरहन सजा न सका

जितनी हसीन हुनिया है देखने में अंजुम
सच बात ये है दुनिया उतनी हसीं नहीं है

हमारे मड़े शायरों ने जिनमें मीर तक़ी मीर, ग़ालिब और इक़बाल ख़ास तौर से क़ाबिले ज़िक्र हैं हमें रवायात के लाज़वाल खज़ाने देते हैं उनमें एक चमकता दमकता मोती वो भी है जिसे ग़ालिब ने हसरते तामीर कहा है या इक़बाल ने क़ाविश पैहम का नाम दिया है या जिसकी तरफ़ मीर तक़ी मीर ने यह कहकर इशारा किया है

मत सहल हमें जानों मिरता है फ़लक बरसों
तब ख़ाक के परदे से इन्सान निकलते हैं

सरापा आरज़ू होने ने बन्दा कर दिया हमको
वरन्। हम खुदा थे गर दिल बेमुद्दा होते

इस रवायत को संभाल कर रखना इसका एहतराम करना और इसे आगे बढ़ाना सिर्फ़ औरों ही की नहीं सारे आलमे इन्सानियत की मीरास है ये तस्सव्वुर सुधा अंजुम के यहां इस पैरायै मैं नज़र आता है

अंधैरे रात के 'अंजुम' बड़े ही गहरे हैं
इन्हीं अंधेरों में इक सुबह जगमगाएगी
बता दो ज़माने को तुम क्य। हो 'अंजुम'
ज़माने में कोई निशां अपना छोड़ो
किसी भी रंग में दिल की प्यास कम न हुई
वफ़ा के रंग थे गहरे ये धुल न पाएहैं

किसी भी फ़नक़ार के लिए प्यास का न बुझना बड़ी दौलत है सुधा को अगर ये एहसास है कि उसके दिल की प्यास कम नहीं हुई तो यह उसके फ़न की खुशनसीबी है जो उसकी शायरी के लिए नेक फ़ाल है। खुदा करे, ये प्यास कभी कम न हो और उसका फ़न हमेशा नई मंजिलों को तलाश करता हुआ आगे बढ़ता रहे।

प्रो०: जगन्नाथ आज़ाद
शोअबा उर्दु
जम्मु यूनिवर्सिटी
जम्मु

16 अप्रैल 1991

सबको समझे प्यार के क़ाबिल
कितना सादा है अपना दिल

तुमने अपना समझा वरना
हम हैं दुनियां में किस क़ाबिल

डूब रहा था भंवर में जब वो
देख के रोया उसको साहिल

पूछ रहा है तुम कैसे हो
किस दर्जा मासूम है क़ातिल

हर कोशिश बेकार न होगी
कुछ तो होगा हमको हासिल

जब भी हम मंज़िल से बिछड़े
ढूंढती रह गई हमको मंज़िल

वक़्त तमाशा देख रहा था
हम थे अपने आप से ग़ाफ़िल

हंस ले हम पे शौक़ से अंजुम
कुछ न होगा लेकिन हासिल

किसी की याद के फैले हुए जो साए हैं
ये मेरी आंख से नींदें चुराने आए हैं

चमक रहा यह सूरज मगर अंधेरा है
लबे ख़मोश से बस इतना कहने आए हैं

है कैसी रात नहीं रौशनी सितारों में
बुझे-बुझे से हैं जैसे वो काले साए हैं

कभी पलट के न आएंगे रोक लो हमको
किसी की आंख के आंसू ये कहने आए हैं

किसी भी रंग में दिल की प्यास कम न हुई
वफ़ा के रंग हैं गहरे ये धुल न पाए हैं

न रोक पाएंगे उनको कभी दरो-दीवार
जिन्हें है इश्क वो हरगिज़ न लड़खड़ाए हैं

●

उसपे सब कुछ निसार हो जाए
जिसपे कुछ एतबार हो जाए

काश, दीदारे-यार हो जाए
ज़िन्दगी पुर बहार हो जाए

काश मिल जाए वो कभी हमसे
ख़त्म ये इन्तिज़ार हो जाए

क्या करे कोई ऐसे आलम में
दिल अगर बेक़रार हो जाए

चन्द लम्हे जो गुज़रें साथ उसके
उम्र उस पर निसार हो जाए

दिल अगर ग़म-गुसार हो जाए
हमको ख़ुद से भी प्यार हो जाए

या तो ताल्लुक़ ही न रहे दिल से
या ख़त्म इन्तज़ार हो जाए

हंस के कहती है नींद रातों से
हर सितारा शुमार हो जाए

कम से कम इस क़दर करम करना
ग़म से दिल हमकिनार हो जाए

दफ़्न हो जाएं इसमें हम 'अंजुम'
दिल जो उसका मज़ार हो जाए

राज़े दिल उनसे यूं हम छुपाते रहे
रूबरू उनके नज़रें चुराते रहे

हर कदम पर हमें आज़माते रहे
आप दीवना हमको बनाते रहे

रौशनी थी दिया था न मंज़िल ही थी
शमए-दिल खून से हम जलाते रहे

जी में आया के कहदें उन्हें राज़े दिल
बेबसी में मगर मुस्कुराते रहे

आज तक आपका रूठना याद है
आज तक आपको हम मनाते रहे

बारे-ख़ातिर न हो तो मैं इतना कहूं
किस लिए मेरी दुनियां में छाते रहे

उनकी यादें थी इस दिल को घेरे हुए
ख़ल्वतों में भी महफ़िल सजाते रहे

दिल में क्या बात थी उनके 'अंजुम' मगर
देखकर मुझको वो मुस्कुराते रहे

गरदिशें ज़माने की जब तुम्हें रुलाएंगी
देखना मेरी बातें तुमको याद आएंगी

दिल की बेक़रारी में कुछ सुकून पाओगे
जब कभी तस्सव्वुर में मुझको पास लाओगे

क्या हसीन रातों का दर्द सह गए हैं हम
अब तो उन बहारों का साया रह गए हैं हम

जब कभी मुहब्बत से तुम मुझे पुकारोगे
दिल के आईने में जब मेरे ग़म उतारोगे

जब भी मेरी यादों को तुम गले लगाओगे
इस क़दर मुहब्बत में मुझको पास पाओगे

कुछ हसीन यादों से दिल में दर्द उठता है
इक चिराग़ की सूरत दिल को जलना पड़ता है

ये जहान घड़ लेगा सैंकड़ों फ़साने से
कह सके न हम लेकिन दूर जाने वाले से

●

सोचकर किसी को फिर बहकने लगा है दिल
एक-एक आहट पर धड़कने लगा है दिल

वो भी गुज़रे लम्हों को याद करके रोता है
सोगवार है वो भी ये ग़ुमान होता है

मुझसे वो जुदा होकर भी जुदा नहीं हरगिज़
दूर ही सही लेकिन बेवफ़ा नहीं हरगिज़

इक नई मुहब्बत के दिल में बीज बोती हैं
धड़कनें भी क्या दिल की दिल से दूर होती हैं

गरदिशें ज़माने की जब तुम्हें रुलाएंगी
देखना मेरी बातें तुमको याद आएंगी

●

दिल से जो मांगा था जब नहीं पाया उसने
कितने वीरानों से दिल को लगाया उसने

किस तरह भूलता हर ज़ख्म नया था दिल पर
तोड़ दिया हमने जो पैमाना भी लाया उसने

उंगलियां उसपे उठाते हैं ज़माने वाले
इक मेरे वास्ते क्या हाल बनाया उसने

वो अगर चुप है तो हालात ही ऐसे होंगे
ये यकीं कैसे करूं मुझको भुलाया उसने

कोई आंसू नहीं आंख में जो अब बह निकले
ये मुझे याद नहीं कितना रुलाया उसने

मुझको इस पर भी नहीं कोई गिला ए 'अंजुम'
उम्र भर गो मेरी नींदों को उड़ाया उसने

●

इतने क़रीब आकर जो फ़ासले बढ़ाए
वजबूरी-ए-ज़माना कोई हमें बताए

वो बेवफ़ा नहीं जब क्यूं बेरुखी दिखाए
अश्कों से मेरा दामन क्यूं भीग-भीग जाए

आंखों में अश्क़ उभरे दिल डूब-डूब जाए
अब फैलने लगे हैं मायूसियों के साए

जाने कहां गया वो न जाने कब वो आए
याद ऐसे बेवफ़ा की दिल को है क्यूं रुलाए

देखा न जाए मुझसे उतरा हुआ ये चेहरा
अपना समझ के मुझको वो हाल-ए ग़म सुनाए

पाकर उदास तुमको कहीं हो न ऐसा
बाहों में भर लूं तुमको यह दिल मचल न जाए

कहने को कह गए हम तुम भूल जाओ हमको
इतनी सी बात पर क्यूं ये होंट थरथराए

●

क्यूं है उदास आंखे क्यूं है उदास चेहरा
पूछेंगे हाल सारा ये दिल संभल तो जाए

यह दिल भी है तुम्हारा यह जां भी है तुम्हारी
इस बात का तुम्हें अब कैसे यकीन आए

गो मेरी ज़िन्दगी से वो दूर जा चुका है
इस पर भी वो है मेरा दिल को यकीं न आए

हम होश खो न बैठें दीवानगी में 'अंजुम'
अब तक इसे संभाला दिल डगमगा न जाए

●

इक पल नहीं हुआ था
जो दूर इस नज़र से
अब उसके देखने को
मेरी निगाह तरसे
नाराज़ है वो या फिर
मजबूर हो गया है
इक उम्र हो गई है
गुज़रा नहीं इधर से
क्या जाने किस जहां में
जाकर वो खो गया है
मुदद्त हुई के वापस
आया नहीं सफ़र से
उसके ख़्याल से कुछ
तस्कीन सी है मिलती
पड़ते हैं मेरे दिल में
यादों के जब भंवर से
मैं किस तरह यह कहदूं
वो बेवफ़ा है 'अंजुम'
आंखों से मेरी अक्सर
वो अश्क़ बन के बरसे

●

आती है मुझे अपनी भी अब याद बहुत कम
दिल भी है परेशान सा आंखें भी हैं पुरनम

मुमकिन है के भूले से निकल आए इधर वो
बस इक इसी उम्मीद पे ज़िंदा हैं अभी हम

तुमने ये कहा था के गया वक़्त नहीं मैं
फिर कौन सी मजबूरियां घेरे रहीं पैहम

दिल टूट गया फिर भी मदावा न करेंगे
ज़ख्मों से लहू टपके है आंखें भी हैं पुरनम

थीं रास इसे कितनी मुहब्बत को फ़ज़ाएं
यादों की पतंग आके कहां कट गई हमदम

बेसाख़ता हमने उसे सौ बार पुकारा
जब भी ग़मो-अलाम से कुछ टूट गए हम

यादों के ख़राबे में यहां कोई नहीं है
आहट है ये मेरे दिले बरबाद की हमदम

किस बात का शिकवा करें हम अश्क़ बहाएं
'अंजुम' यहां रोने की फ़ुरसत है बहुत कम

●

ग़मज़दों को दर्द जीने का बहाना हो गया
शुक्र है के ज़िन्दगी का कुछ ठिकाना हो गया

कोई पल कटता नहीं था जिनकी कुरबत के बग़ैर
उनको अब देखे हुए भी इक ज़माना हो गया

वो मुलाकातें वो शिकवे वो हंसी, कौलो-क़रार
ऐसे लगता है ये माज़ी का फ़साना हो गया

दिल उड़ाने को वो निकला था मगर दिल दे गया
क्या शिकार उसने किया वो ख़द निशाना हो गया

इक सितमगर को समझ बैठा है ये अपना ख़ुदा
दिल का ये अन्दाज़ कितना काफ़राना हो गया

उसकी ख़ातिर रात दिन हम छानते फिरते हैं ख़ाक
इससे क्या उसको जो कोई बेठिकाना हो गया

मुस्कुरा देते हैं ए 'अंजुम' हम अपने हाल पर
अपना हर अंदाज़ कितना शायराना हो गया

दिल के हर ज़ख्म पर उनकी वो हंसी याद आई
चारासाज़ों की मूझे चारागरी याद आई

जिससे कुछ रब्त न था जिससे न थी कोई निस्बत
हर क़दम ज़िन्दगी में उसकी कमी याद आई

उसकी बातों ने कभी कानों में रस घोल दिया
उसकी आंखों की कभी जादूगरी याद आई

क्या कहूं कितने सितम तोड़े हैं उसने मुझ पर
दिल को फिर उसकी वो सादा सीं हंसी याद आई

बारहा दिल पे मेरे उसने जो दस्तक दी है
उसकी जो याद भी थी, जादूभरी, याद आई

मुद्दतों बाद ये दिल फिर जोर से धड़का है
मुद्दतों बाद मुझे आज तेरी याद आई

दिल तड़प उट्ठा किसी टीस से जब भी 'अंजुम'
तेरी नज़्में तेरी अफ़सानागरी याद आई

●

किसी के लब पे आके मेरा नाम तो मचल गया
मगर मेरे क़रीब जो आया तो वो बदल गया

हज़ार बार उसका शुक्रिया अदा करूं मगर
मुझे दिए हैं जिसने ग़म वो खुद ग़मों में ढल गया

तेरे फ़िराक़ में जो दिल का हाल है किसे कहूं
वो दिल में आग सी लगी आस्मां भी जल गया

रहे-हयात में हैं हर क़दम हज़ार ठोकरें
मगर ये दिल के हर क़दम पे आप ही संभल गया

भुला सके न हम जो उसके दर से भी मिला हमें
अजीब दर्द था के अपनी जिन्दगी में ढल गया

बग़ैर उसके ज़िन्दगी बिखर गई है बेतरह
अदाएं भी वो मिट गई वो तौर भी बदल गया

वो जिसके आसरे मेरी शबे-अलम गुज़र गई
मेरा नसीब दर्द का हसीन चांद ढल गया

तुम्हारे पास आ के हम तुम्हीं में जज़्ब हो गए
ज़रा सा दिल का रब्त था जो चाह में बदल गया

●

हज़ार दूर हों वो ये क़रीब लाएगी
वफ़ा की डोर है हरगिज़ न टूट पाएगी

ये प्यार एक समन्दर हे रुक सकेगा कहां
ये कोई नदि नहीं है जो सूख जाएगी

फज़ाओं में कई नग्मात गूंज उट्ठेंगे
क़दम-क़दम पे तेरी आवाज़ गुनगुनाएगी

सितम भी करना मगर इसका भी ख़्याल रहे
सितम से दिल की हर इक आस टूट जाएगी

जो दर्द हद से गुज़र जाएगा मुहब्बत में
मुझे यकीं है तबीयत सुकून पाएगी

मुझे ये इल्म था बख़्शी है जो मुहब्बत ने
वो बेक़रारी किसी रोज़ रंग लाएगी

अंधेरे रात के 'अंजुम' बड़े ही गहरे हैं
इन्हीं अंधेरों से इक सुबह जगमगाएगी

●

किस बात पे वरहम हो
फ़क़त इतना बताओ
तुम इसमें बसे हो
न मेरे दिल को जलाओ
मुदद्त में मिले हो मुझे
कुछ देर तो रुक जाओ
दिल उजड़ी सी बस्ती है
कभी इसको बसाओ
ख़ामोश निगाहों में है
क्यूंकर ये उदासी
कुछ मेरी सुनो और कुछ
तुम अपनी सुनाओ
दिन रात धड़कता है
ये दिल दीद की ख़ातिर
हमसे न रहो दूर न
धड़कन को बढ़ाओ
दिल ने कभी चाहा है के
हम तुम को मनाएं
दिल ने कभी चाहा है के
तुम रूठ से जाओ
तुमने हमें चाहा था कभी
ठीक ही होगा
इक बार हमें आ के
यकीं इसका दिलाओ
दिल राहे मुहब्बत में
अब ख़ामोश है कितना
बुझने को यह शमा है
इसे आ के जलाओ
भर देंगे अजब ताज़गी
ये शेरों में अंजुम
खाए हैं जो दिल पर
ग़मों-अलाम के घाओ
ये आग है दिल की
न कभी इनसे बुझेगी
अंजुम न कभी अश्क़ों से
तुम इसको बुझाओ

मुझपे बस इतना करम फ़रमाइए
आप मेरी आरज़ू बन जाइए
दूर रह कर आज़माया आपने
अब मेरे नज़दीकतर आ जाइए
बात ये गुज़रेगी सब को नागवार
बज़्म में नज़रें न यूं टकराइए
वक़्त रोके से नहीं रुकता कभी
आप ही कुछ देर को रुक जाइए
मैंने माना मुझसे कुछ निस्बत नहीं
दिल के मेहमां बन के रह जाइए
जब मुहब्बत है तो क़समे किसलिए
इस क़दर क़समें न मेरी खाइए
आपके जाने से होगा घर उदास
मानिए मेरी यहीं रह जाइए
इसपे हम इसरार तो करते नहीं
आप आए हैं तो फिर रुक जाइए
हम तो 'अंजुम' सुन रहे हैं ग़ौर से
दिल में जो कुछ है वो कहते जाइए

●

आंखों से हुए आंसू जारी
हैरान हुई दुनियां सारी

शमअ पे मिटा जो परवाना
बस फैल गया इक अफ़साना

परवाना जो क़ुरबां होता रहा
अपनी क़िस्मत पे रोता रहा

तस्वीर थी कुछ ऐसी दिल में
जैसे इक हसरत थी दिल में

क्या-क्या न ख़्याल आए मन में
बीते दिन कुछ इस उलझन में

जज़बात पे क्या क़ाबू रहता
हालात पे क्या काबू रहता

फ़स्ले गुल ऐसे गुज़र सी गई
रंगीन खिज़ां को कर सी गई

वो था मसरूर मुहब्त में
था होश कहां कुछ उल्फ़त में

हर चीज़ को अक्सर भूल गया
दुनिया यक्सर भूल गया

आसान उसे सब कुछ पाना
जिसको आता हो मिट जाना

जो अंगारों पर चलते हैं
वो प्यार की आग में जलते हैं

जो दुनियां के गम सहते हैं
वो मिट कर ज़िंदा रहते हैं

●

तनहाई मैं पुकारा किसने
इस लम्हे को संवारा किसने

दर्द की सज्ज़त मीठी-मीठी
इसमें मुझे उतारा किसने

मिट थे गए हैं सब अंधियारे
रौशन किया सितारा किसने

दिल में लहर उठी है कोई
मुझको अभी पुकारा किसने

सब कुछ डूब गया साहिल पर
ऐसे किया किनारा किसने

मिलने लगा है इसमैं सुकूं अब
दर्द बनाया चारा किसने

बेहोशी के इस आलम से
मुझको आज उभारा किसने

कोई मजबूरी तो होगी
ग़म को किया गवारा किसने

●

मेरे ख़्वाब थे फीके-फीके
इनमें रंग उभारा किसने

तुम क्यूं घबराए फिरते हो
तुमसे किया किनारा किसने

मोड़ दी साहिल की जानिब फिर
तुफ़ानों की धारा किसने

ये सब कहने की बातें हैं
तनहा वक़्त गुज़ारा किसने

'अंजुम' किन सोचों में गुम हो
दिल से किया किनारा किसने

●

चन्द लम्हों की बात बाकी है
और अभी सारी रात बाकी है
आरज़ूओं के काफ़ले गुज़रे
हसरतों की बारात बाकी है
दिन मसर्रत का कट गया लेकिन
ग़म की तारीक रात बाकी है
उसको देखा नहीं है जी भर के
उसको पाने की बात बाकी है
दिल को करने दे इन्तज़ार उसका
खुल न जाए रात बाकी है
इब्तिदा है अभी मुहब्बत की
जो भी खानी है मात बाकी है
ग़म भी होंगे मसर्रतों के बाद
चांद निकला है रात बाकी है
एहतियातन वो चुप रहा होगा
दिल में जो भी है बात बाकी है
कौन सी शब का माहताब है तू
मेरी क़िस्मत की रात बाकी है
और सब मरहले तमाम हुए
इश्क़ की वारदात बाकी है
मिटने वाली है हर खुशी दिल की
खेल जारी है मात बाकी है
आप जब तक हैं रू-ब-रू मेरे
ये हसीं चांद रात बाकी है
जिन्दग़ी है तो हर क़दम 'अंजुम'
गरदिशे हादसात बाकी है

●

रिश्ता ही तोड़ डाला है दिल से क़रार ने
बेचैन कर दिया इसे किसकी पुकार ने

आख़िर मैं किस तरह ये हक़ीक़त बयां करूं
दीवाना कर दिया है मुझे तेरे प्यार ने

शायद तेरी निगाहों को इसकी ख़बर नहीं
घायल किया है तुझको निगाहों के वार ने

देखीं हैं उसके चेहरे पे वो रौनकें न पूछ
जैसे वो ज़िन्दगी को लगा हो संवारने

वो आ रहा है कोई ज़रा इन्तज़ार कर
दी हैं तस्सलियां ये शबे इंतज़ार ने

बेइख्तियार दिल को तेरी याद आ गई
जब-जब लगे हैं प्यार की बाजी को हारने

इस बेक़रार दिल का कभी हाल पूछ ले
लूटा है चैन दिल का तेरे इंतज़ार ने

'अंजुम' किसी तरह भी ये ज़ाहिर न कर सके
क्या-क्या दिए हैं ज़ख्म निगाहों के वार ने

मुस्कुराती हुई आंखों में शरारत उसकी
देर तक याद रहेगी वो मुहब्बत उसकी

उसकी आंखों में है बिखरे हुए सपने उसके
उसके चेहरे पे है उड़ती हुई रंगत उसकी

ये सुना है के वो करता है मुझे याद बहुत
रंग पर आती है जब-जब तबीयत उसकी

कर सके हम न किसी तौर कभी इसको क़बूल
सैंकड़ों बार मिली है हमें दावत उसकी

याद आते हैं बहुत मुझको बहाने उलके
याद आती है बहुत शोख़ तबीयत उसकी

उससे तहरीक़ सी मिलती थी हमें जीने की
हम फ़रामोश न कर पाएंगे कुरबत उसकी

हमको लें डूबेगा जादू भरी आंखों का कमाल
रंग लाई जो कभी शोख़ तबीयत उसकी

दिल ये रुकता नहीं रोके से कभी ए 'अंजुम'
खींचती है मेरे दिल को जो मुहब्बत उसकी

●

बन गए सकड़ों फ़साने तक
उनको मेरा यक़ीन आने तक

कौन समझा है इस ज़माने को
कौन पहुंचा है इस ज़माने तक

फिर कहां खो गई नहीं मालूम
बरक़ लपकी थी आशियाने तक

उनकी किस बात का करें मसकूर
याद है उनके वो बहाने तक

किसको मालूम हम कहां होंगे
बज़्मे हस्ती में रंग आने तक

हो गया खुद वो बेठिकाना सा
जो भी पहुंचा तेरे ठिकाने तक

कौन जाने ख़िज़ां में क्या गुज़रे
गुलिस्तां में बहार आने तक

सैकड़ों मरहले है रस्ते में
आपके हमको आज़माने तक

दिल को बहलाएं किस तरह 'अंजुम'
कोई ताज़ा फ़रेब खाने तक

●

आंसू बनकर बह जाओगे
याद कभी जब तुम आओगे

बात जो हम कहने वाले है
क्या तुम उसको सुन पाओगे।

कब तक झूठी उम्मींदों से
अपने दिल को बहलाओगे

लब पे कई शिकवे आएंगे
जब रस्ते में मिल जाओगे

दुनियां फिर दुनियां है आख़िर
इसको क्या-क्या समझाओगे

इश्क़ है कोई खेल नहीं है
इसकी आग में जल जाओगे

किस उम्मीद पे अब बिछड़े हो
तुम कब तक फिर मिल पाओगे

जब भी याद करोगे मुझको
नाहक़ दिल को तड़पाओगे

'अंजुम' ये मालूम नहीं था
तुम ग़म में भी मुस्काओगे

●

दुनियां से क्या रिश्ता तोड़ें दुनिया तो इक बन्धन है
खोज से क्यूंकर मुंह को मोड़ें खोज तो अपना जीवन है

क़दम बढ़ा कर चलता चल तू रुकने का अब नाम न ले
अनदेखे रस्तों पर चलते रहना ही तो जीवन है

भटक भी जाओगे राहों में खो जाओगे ग़रदिश में
और कभी महसूस ये होगा ख़ाली अब तक दामन है

कहने वाले कहते हैं ये हमको भी सच लगता है
उसके पांव में छाले होंगे जिसका मन उजला मन है

भागोगे दुनियां से लेकिन ख़ुद से कब तक भागोगे
इसमें अपना अक्स मिलेगा ये जीवन इक दर्पण है

ग़म ही ग़म जिसके दामन में जिसकी आंखों में आंसू
जिसके पास हों इतने मोती उसका जीवन ही धन है

कुछ भी हो लेकिन 'ए अंजुम' पा के रहेंगे मंज़िल को
दिल में है जब इसका यक़ीं तो फिर ये कैसी उलझन है

●

ये ऊदी-ऊदी घटाएं इधर का रुख़ न करें
न मेरे दिल को दुखाएं इधर का रुख़ न करें

बड़े हसीन से सपनों में खो गया है दिल
न मेरी नींद उड़ाएं इधर का रुख़ न करें

बिखर सा जाएगा आशियां बनाया है
चलें जो तेज़ हवाएं इधर का रुख़ न करें

किसी की याद सताएगी और शिद्दत से
कहो के मस्त घटाएं इधर का रुख़ न करें

पड़ी निगाह जो उन पर तड़प उठेगा दिल
न मेरे सामने आएं इधर का रुख़ न करें

यही है दिल की तमन्ना वो मेरे माज़ी को
मुझे न याद दिलाएं इधर का रुख़ न करें

न दिल की धड़कनें कुछ और तेज़ हो जाएं
वो मेरे पास न आएं इधर का रुख़ न करें

●

ज़िन्दगी यूं भी आज़माई है
हर क़दम दाव पर लगाई है
इक नई चोट हमने खाई है
आपसे जब से लौ लगाई है
जब से छूटा है उस हसीं का साथ
मुन्तशर किस क़दर ख़दाई है
या ये कहदे तू मुझको भूल गया
दिल को इक आस क्यूं बंधाई है
हर घड़ी सामने है वो मौजूद
ये जुदाई भी क्या जुदाई है
हुए हम बेनियाज़ हर शय से
जब से उसने नज़र मिलाई है
उसके हर हाल की है मुझको ख़बर
हर दुआ मेरी रंग लाई है
उसकी आंखों की क्या करें तारीफ
जिसने आंखों से मय पिलाई है
इश्क़ है बेनियाज़ हर शय से
हुस्न को शौक़ै खुदनुमाई है
ज़िन्दगी मुक्तसर सी थी लेकिन
उसके वादे पे ये बिताई है
बेवफ़ा उसको कह नहीं सकते
ये मगर कैसी आशनाई है?
बन के नश्तर चुभे हैं शेर मेरे
लब पे जब दिल की बात आई है
उसकी आंखें भी भर गईं 'अंजुम'
दास्तां जब उसे सुनाई है

●

बिछड़ गया है कभी जो था आशना हमसे
न जाने हो गया किस बात पर ख़फ़ा हमसे

लगा के रखा है सीने से धड़कनों की तरह
जुड़ा ही रहने दे यादों का सिलसिला हमसे

हज़ार ज़ब्त किया हमने, मुस्कुराए भी
मगर है आज भी तन्हा वो कह गया हमसे

हम इतना जानते थे तुझसे इसको निस्बत है
उसे है दिल से लगाया जो ग़म मिला हमसे

न देख राह कभी इन सियाह रातों में
तू मुन्तिज़र है अबस हो के अब जुदा हमसे

सुहानी रातों में अब कोई दिलकशी न रही
हुआ वो जाने वफ़ा जब से कुछ ख़फ़ा हमसे

कुछ ऐसी साध ली चुप सी ज़ुबां से कुछ न कहा
के कर सके न ज़माना कोई गिला हमसे

हज़ार रंग बदलती रही है ये दुनिया
है ज़िंदा फिर भी वफ़ाओं का सिलसिला हमसे

तमाम उम्र सजाएं हैं ख़्वाब क्यूं इनमें
रहा है उम्र भर आंखों को ये गिला हमसे

खुद अपनी नाव को हमने डुबो दिया 'अंजुम'
न जाने किसलिए बरहम है नाख़ुदा हमसे

●

मुझे ख़बर भी नहीं क्या हुआ ये कैसे हुआ
उतर गया है तू एहसास बनके इस दिल में
तेरे ख्याल में दिल खो गया है अब इतना
के बात-बात पे घबरा रहा है महफ़िल में

छुपे हुए तेरी आग़ोश में खज़ाने हैं
हसीन चांद सितारे हैं और उजाले हैं
चमन में फ़स्ले बहाराँ हैं तेरी आमद से
के तेरे तस्क़रे जारी हैं आज महफ़िल में

ये ज़िन्दगी तो मुहब्बत का एक साया है
इस क़दर दिल को तमन्नाओं ने उलझाया है
किसी तरह अब मुमकिन नहीं किनाराक़शी
नफ़स-नफ़स है मेरी ज़िन्दगी का मुश्किल में

जो बात कह न सके ख़ुद से आज तक भी हम
वो बात किस तरह कह दें भला ज़माने से
तेरी यह तरसी हुई नज़रें और इनका सुकूत
छुपा हुआ कोई तूफ़ान है तेरे दिल में

ये झूठी रस्में हैं दुनियां की दुनियां भी झूठी
हैं इसके लोग भी झूठे फ़साने भी झूठे
बिखर के रह गया है आरज़ू का हर तिनका
चलीं हैं हादसों की ऐसी आंधियां दिल में

यह बात किससे कहें दिल पे जो गुज़रती है
जो अश्क उमड़ें तो बदली सी इक बरसती है
यही है खौफ़ के रुसवाइयां न मिल जाएं
तेरा ख्याल है जब से बसा हुआ दिल में

●

मेरे नग्में और हैं मेरा तराना और है
तेरी चाहत तेरे मिटने का फ़साना और है

धड़कनें होती गईं हैं हर कदम पर तेज़तर
सांस भी रुकती हुई महसूस की हमने मगर
दिल ने जो चाहा था सुनना वो फ़साना और है

बेक़रारी का वो आलम है उदासी है बहुत
जल रहे हैं आग में ये रात प्यासी है बहुत
दिल की दुनियां से मगर बाहर ज़माना और है

थीं हसीं ये वादियां पहले मगर इतनी नहीं
इस तरह पहले क़यामत भी कभी टूटी नहीं
तू नहीं मुझको मिला इसका फ़साना और है

झांकना चाहा था इनमें डूबना चाहा न था
मैंने उन आंखों को इस अन्दाज़ से देखा न था
दे गया धोखा ये मेरा दिल दीवाना और है

यह हुआ है तेरी हर इक बात का दिल पर असर
हो गए हैं तुझमें गुम अपनी नहीं कोई खबर
वो ज़माना और था अब ये ज़माना और हे

●

ये बात राहे मुहब्बत में आम होती रही
हरेक शाम मेरी उनके नाम होती रही

इस एक मशग़ले में एहले दिल रहे मसरूफ़
के रूठने में मनाने में शाम होती रही

ये और बात है हमने ज़ुबां से कुछ न कहा
निगाहे-शौक़ मगर हमक़लाम होती रही

क़दम-क़दम पे पुकारा तुझे मेरे दिल ने
तेरी तलब मुझे हर एक गाम होती रही

मुझे नसीब हुई है वो दिल की बेताबी
खुद अपने आप से जो हमक़लाम होती रही

जहां को मिल न सका कोई भी सुराग़ तेरा
तेरी तलाश मगर सुबहो-शाम होती रही

कहां से ढूंढ के लाएंगे हम उसे 'अंजूम'
वो इक नज़र जो वफ़ा का पयाम होती रही

●

यह समां ये रुत ही बदल गई
नहीं तुम जो आए बहार में
कभी हम ख़्यालों में गुम हुए
कभी रास्ते के ग़ुबार में
वो हसीन यादों की सायतें
वो हसीन यादों के सिलसिले
वो मक़ाम भूलेंगे किस तरह
जहां हम मिले थे बहार में
तेरा कुरब मुझको न मिल सका
मुझे एहतराफ़े शिक़स्त है
तुझे इसकी लेकिन ख़बर नहीं
मेरी जीत है मेरी हार में
तेरे इन्तज़ारे तवील में
मेरे दिल को ख़ाक सुकूं मिले
जो किसी तरह भी न बुझ सके
वो लगी है आग बहार में
उसे ढूंढने कहां जाइए
वो दिखाई देगा जगह-जगह
के हैं उसके जलवे छुपे हुए
कहीं फूल में कहीं ख़ार में
बड़ा शोर सुनते थे उनका हम
के जिन्हें ख़िज़ा ने मिटा दिया
कभी उनका हाल भी पूछना
जो उजड़ गए हैं बहार में

●

हम न होंगे फिर भी उजड़ेंगी न हरगिज़ बस्तियां
गुनगुनाएगी फज़ा आंखों में भरकर मस्तियां

इब्तिदा में किसलिए तुम दिल शिक़स्ता हो गए
तुमको तो टकरानी हैं तूफां से अपनी कश्तियां

कौन सा जादू हैं इसमें कौन सा एज़ाज़ है
इक तेरी आवाज़ से गूंजीं हैं कितनी बस्तियां

हम मुहब्बत में मुसाइब से कभी डरते नहीं
जान पर हम झेलते हैं किस क़दर हो सख़्तियां

ऐसे लगता है के ये इक अजनबी माहौल है
देखते हैं जब कभी इन्सान की हम पस्तियां

वक्त ने हमको सिखाया हादसों से खेलना
मुस्कुरा कर हम उठाते हैं हज़ारों सख्तियाँ

हो गया ये सर्द कैसे दिल तो था शोला तेरा
तेरे इस अंदाज़ पे हैराँ न हों क्यूं पस्तियाँ

देखते रहते हैं 'अंजुम' मुंह से कुछ कहते नहीं
खूबसूरत सी उन आंखों में हैं कितनी मस्तियां

●

नज़र-नज़र से किए थे कई सवाल उसने
बयान ऐसे किया अपने दिल का हाल उसने

हज़ार तरके-ताल्लुक़ पे याद आता रहा
ये सिलसिला भी किया इस तरह बहाल उसने

अगरचे मैंने उसे बेवफ़ा भी कह डाला
न मेरी बात का दिल में किया मलाल उसने

मेरे ख़्याल तो क्या मेरा दिल भी छीन लिया
के लाया ज़िन्दगी में कैसा ये बवाल उसने

न क़द्र की मेरे जज़बात की किसी सूरत
किया है दिल को बहरतौर पायमाल उसने

न जाने कौन सा ग़म उसको खाए जाता है
खुद अपने आप का ये क्या किया है हाल उसने

क़दम-क़दम पे भुलाया न जा सका उसको
क़दम-क़दम पे दिखाया है ये कमाल उसने

उसी को सबकी नज़र ने हसीं बना डाला
के जिसपे डाल दिया साया-ए जमाल उसने

ये राज़ खुल न सका मेरे दिल पे ए 'अंजुम'
के इंतज़ार में काटे हैं माहो-साल उसने

मुझी से मांग लिया उसने मुझको ए 'अंजुम'
जवाब इसका कहाँ जो किया सवाल उसने

●

किसी के आने से ये ज़िन्दगी निखर सी गई
बिगड़ चुकी थी जो हालत वो कुछ संवर सी गई

ये सोचते थे के इक पल न जी सकेंगे हम
सहर से शाम हुई रात भी गुज़र सी गई

ये बात सच है के जब भी तेरा ख्याल आया
निगाहे-शौक़ में इक चांदनी बिखर सी गई

कभी अकेले में दिल पर जो तुमने दस्तक दी
तमाम ज़िन्दगी मेरी संवर-संवर सी गई

सुना है अब भी वो तन्हाइयों में रहता है
वो मुस्कुराया है जब आँख उसकी भर सी गई

अगरचे चुप से रहे और ज़बां से कुछ न कहा
निगाहे-शौक़ मगर फिर भी बात कर सी गई

ठहर गए हैं ज़माने हम जहाँ 'अंजुम'
किसी की याद भी आकर वहीं ठहर सी गई

●

नाराज़ हो के भी दिल रहा उसके आस-पास
दिल को मेरे यक़ीन है वो है बहुत उदास

दिल का सुकून दिल की खुशी दिल का चैन तक
हम तो गंवा चुके हैं जो कुछ था अपने पास

वो मेरे रूबरू हैं मेरे दिल के हैं वो पास
बुझती नहीं किसी तरह जन्मों की फिर भी प्यास

देखा मुझे तो उसने निगाहें ही फेर लीं
इतनी सी बात थी जो मुझे कर गई उदास

ये खूब तुमने प्यार का मुझको सिला दिया
तुम बेवफ़ा हो मैंने था समझा वफ़ा शनास

'अंजुम' उमड़ से आए हैं आंखो में अश्क़
क्या बात है जो रहता है दिल इस तरह उदास

●

नहीं ख्याल कोई
मेरे दिल कीं ख़्वाहिश पर
वो इतने दूर हुए हैं
ज़रा सी रंज़िश पर
न जाने कब हों ख़फ़ा
ये हवाओं की सूरत
भरोसा क्या करें
लुत्फ़ो-करम की बारिश पर
हरेक ग़म जो दिया
तूने मुझको प्यारा है
मिला है मुझको ख़ज़ाना
ज़रा सी ख़्वाहिश पर
बिठा के रूबरू
उसको सुनाई है जो गज़ल
वो दाद देता रहा है
हर एक बन्दिश पर
उड़ा के ले गई आंचल
कहां-कहां ज़ालिम
हुए हैं किस क़दर रुसवा
हवा की साज़िश पर
यही ख़्याल रहा
बस वो आ रहा होगा
तमाम उम्र कटी
अनबुझी सी ख़्वाहिश पर
हमें यकीन था
उस तक पहुंच ही जाएंगे
लगाया दाव था हमने
हवा की साज़िश पर
अगरचे एहले-नज़र था
वो ठीक है 'अंजुम'
मगर मुझे भी भरोसा था
अपनी क़ाविश पर

●

अब वो राहों में
भटकते हैं हवाओं की तरह
जो कभी खुल के
बरसते थे घटाओं की तरह
दिल मेरा बैठता
जाता है न जाने क्यूंकर
आँधियाँ राह को
घेरे हैं बलाओं की तरह
यह मेरी हार है
या जीत मुझे क्या मालूम
उसके दिल में हूं
अभी तक मैं वफ़ाओं की तरह
मेरे ग़म से
मेरे अपने भी हैं ग़मगीन बहुत
मुझपे तक़्दीर भी
हंसती है कज़ाओं की तरह
मुस्कुराते हैं कभी
ग़म में मुहब्बत के आसीर
कभी ख़ामोश
सुलगते हैं चिताओं की तरह
दिल के जज़बात की
अक्क़ास हुआ करती थी

तेरी आवाज़ जो
बिखरी है सदाओं की तरह
टूट जाए न कहीं
दिल का ये नाज़ुक शीशा
किसलिए मुझको
रुलाते हो घटाओं की तरह
दिल की बरबादी पे
यूं अश्क़ बहाने वाले
भड़केगी आग ये
कुछ और हवाओं की तरह

उसने ही मुझको
सिखाई थी मुहब्बत 'अंजुम'
उसने ही इसको
बनाया है सज़ाओं की तरह

●

हवा में लरज़ती हैं सरग़ोशियाँ सी
हुई और गहरी ये खामोशियाँ सी

उन आँखों में नशा सा छाया हुआ है
निगाहों में हैं आज मदहोशियां सी

अजब रंग की बेनियाज़ी है उनकी
हर इक बात में हैं फ़रामोशियां सी

निगाहों में इक सिलसिला गुफ़्तगू का
फिर उस पर किसी की सरगोशियाँ सी

बहुत नाज़ है तुमको आज इनपे लेकिन
रुलाएंगी तुमको ये ख़ामोशियाँ सी

मेरे हाल पे ख़ाक देंगे तवज्जोह
पसंद उनको हैं खुदफरामोशियाँ सी

दिए को बुझाया है आंधी ने कब का
जलाती हैं लेकिन ये ख़ामोशियां सी

तबीयत फ़सुर्दा हुई जब से 'अंजुम'
हर इक शय पे छाई हैं ख़ामोशियाँ सी

●

इश्क़ की बात है बहुत पुरानी
लेकिन हमने नई है जानी
उसकी ठोकर में है ज़माना
जिसने कुछ दिल में है ठानी

इसकी हर इक चीज़ हैं फ़ानी
ये दुनियां है आनी जानी
दोनों हैं मिट्‌टी के पुतले
कौन है राजा कौन है रानी

सिला इश्क़ में मिलेगा उसको
जो देगा इसमें कुर्बानी
ज़िंदा रखेगी गीतों को
तेरी वफ़ाए मेरी कहानी

जब से मिली हैं नज़रें उनसे
लौट के आई फिर से जवानी
ढलती शाम के साए में भी
धूप लगी है अजब सुहानी

मैंने जिसको समझा सब कुछ
उसने मेरी क़द्र न जानी
मुझको आँसू ले डूबेंगे
ज़ोरों पर है ये तुग़यानी

आज भी लिखने बैठे है.
रही अधूरी फिर भी कहानी
ज़रा बदल के कहदी अंजुम
उसने मुझसे मेरी कहानी

●

हमपे वो लुत्फ़ो करम और इनायत तेरी
आज भी याद है इस दिल को मुहब्बत तेरी

दिल में हर शख़्स की ख़ातिर है मुहब्बत कायम
हां मगर सबसे जुदा है ये अक़ीदत तेरी

हमने देखे हैं कई और सुनहरे मंज़र
हां भुला पाए न दिल से कभी सूरत तेरी

मेरे ग़म से हैं मिला तेरी मुहब्बत को फ़रोग़
यानी, महकी है मेरे ग़म से मुहब्बत तेरी

बारहा सोच के तन्हाई में ये घबराऊं
तश्नगी को न मिटा दे कहीं हसरत तेरी

हमसे ऐसी तो कोई बात भी सरज़द न हुई
हुए हैरान से हम सुन के शिक़ायत तेरी

कैसे इस दिल में समाई है, ये हैरत है मुझे
वरना फ़ैली बहुत दूर मुहब्बत तेरी

दिल को तस्कीन भी हासिल थी सुकूं भी लेकिन
छीन कर ले गई हर चीज़ मुहब्बत तेरी

दिल के जज़बात न रुसवा कभी होने पाएं
दिल से क़ायम रहे ता-उम्र ये निस्बत तेरी

ऐसे लगता है इसी वास्ते नाराज़ है तू
हो के मजबूर जो की दिल ने शिक़ायत तेरी

इसका अन्जाम हो क्या ये मुझे मालूम नहीं
दे गई दिल को दिलासा जो मुहब्बत तेरी

वक़्त भर देता है ज़ख्मों को बजा है लेकिन
कर गई और परेशान ये रग़बत तेरी

कौन सी दुनियां में रहता हूं नहीं कोई ख़बर
कर गई मुझको जुदा दुनियां से क़ुरबत तेरी

दिल में सौ ताजमहल थे जो हुए हैं मसमार
और क्या रंग दिखाएगी ये फ़ुरकत तेरी

●

ये बात मुक़्तसर के ज़िन्दगी में इतना प्यार है
मैं उसका एतबार हूं वो मेरा एतबार है

गिला नहीं के उनसे मिल सके न हम कभी मगर
जो हक़ की पूछिए तो उनपे जानो-दिल निसार है

तेरा ख़्याल है के अक़्ल हर क़दम पे रहनुमां
मेरा तुर्जबा ये, जुनून अक़्ल पर सवार है

ये आरज़ू के उनसे मिल के हाल-ए-दिल कहेंगे हम
मिले तो कुछ न कह सके ये क्या अजीब प्यार है

वफ़ा मेरी सरिश्त है जफ़ा है उनका मश्ग़ला
मुझे ये इख़्तियार है उन्हें वो इख़्तियार है

बयान किस तरह करूं मुझे नहीं कोई ख़बर
मेरा ये दिल तेरे लिए जो अब भी बेक़रार है

मुझे ये इल्म है के मुझसे वो ख़फा है हर धड़ी
मगर मुझे यक़ीन है के उसको मुझसे प्यार है

यहां तो एक दूसरे की ख़ामियों पे है नज़र
सितमज़दों का इस जहां में कौन ग़मगुसार है

अजीब अपना हाल है अजीब है ये ज़िन्दगी
इधर हैं बेक़रार हम उधर वो बेक़रार है

●

तुम जो रूठे ख़्वाब भी रूठे
लगने लगे हैं गीत भी झूठे

कोई मजबूरी तो होगी
कैसे कह दूं तुम हो झूठे

बरहम - बरहम उनकी नज़रें
वो रहते हैं रूठे - रूठे

मुमकिन हो तो दिल से भुला दो
हम न कहेंगे तुम हो झूठे

दिल में तेरी तमन्ना जागी
जैसे कोई कोंपल फूटे

गुज़र गए मुंह फेर के जब वो
दिल में कितने नश्तर टूटे

कभी तो हंसकर बात करो तुम
मिलो न हमसे रूठे - रूठे

तुमसे बाबस्ता हैं खुशियां
फिर भी तुम्हारे ख़्वाब हैं झूठे

कुछ ही देर में छट जाएंगे
तारीकी के बादल झूठे

मान लिया हम ग़ैर हैं लेकिन
तुम अपनों की सूरत रूठे

कौन करे तौहीने मुहब्बत
कौन कहे ये आप हैं झूठे

●

मिले हर क़दम राजदां कैसे - कैसे
फ़साने हैं विरदे - ज़ुबां कैसे - कैसे

मिटाया था नक़्शे ातमन्न को लेकिन
हैं बाकी ये दिल में निशां कैसे-कैसे

कोई शय नहीं एक मरकज़ पे क़ायम
बने और बिगड़े जहां कैसे-कैसे

मुहब्बत में मालूम ही ये नहीं था
बिखर जाएगी दास्ताँ कैसे-कैसे

कहां ग़म से फ़ुरसत थी तुम याद आते
के लम्हे हुए रायगां कैसे - कैसे

फ़क़त उनकी अब दास्तानें हैं बाक़ी
ज़माने ने खोए जवां कैसे - कैसे

कई मुश्किलें आ पड़ीं मेरे दिल पर
ज़मीं पर बने आस्मां कैसे - कैसे

हमें रब्त था आपकी ज़ात से बस
बनी इसकी भी दास्तां कैसे - कैसे

गुलिस्तां को मालूम है राज़ 'अंजुम'
उजड़ते रहे आशियां कैसे - कैसे

●

ख़ामोश हैं वो जैसे तज़बज़ब में हों पड़े
दिल उनको देखता है मुक़ाबिल हैं जो खड़े

किसको ख़बर के फिर ये मुलाकात हो न हो
है वक़्त आ भी जाइए हम उदास हैं बड़े

मैं भी वही हूं तुम भी वही फिर ये दूरीयां
क्या बात है के मुझसे बहुत दूर हो खड़े

बैठो हमारे पास कहो दिल का माज़रा
कट जाएगी ये उम्र क्या यूं ही खड़े-खड़े

ये अपनापन है या इसे बेगानगी कहूं
दिल में बसे हुए हैं मगर दूर हैं खड़े

दिल में कोई ख़्याल न इसमें किसी की याद
लेकिन अजीब बात है हम फिर भी रो पड़े

'अंजुम' मेरी निगाह को जिसकी तलाश थी
देखा नज़र उठा के तो दर पे थे वो खड़े

●

गो मिला साथ भी तुम्हारा नहीं
फिर भी हमने तुम्हें पुकारा नहीं

हर मुसर्रत नसीब है हमको
क्या करें अगर वो हमारा नहीं

कल मेरे नाम पर वो मरते थे
अब मेरा ज़िक्र भी गवारा नहीं

यूं तो हासिल कई सहारे हैं
तू नहीं तो कोई सहारा नहीं

वो अगर साथ है तो सब कुछ है
वरना कुछ भी यहाँ हमारा नहीं

जब से सौंपा है इख़्तियार उसे
अब किसी शय पे हक़ हमारा नहीं

थी तमन्ना वो लौटकर आता
हमने लेकिन उसे पुकारा नहीं

किस तरह होगी 'कल' बसर उनकी
वो जिन्हें 'आज' भी गवारा नहीं

हम हैं उसके यही बहुत कुछ है
क्या हुआ वो अगर हमारा नहीं

तुमको मालूम नहीं 'अंजुम'
दिल किसी तौर अब तुम्हारा नहीं

●

आज फिर दिल है कुछ उदास-उदास
गुम है ज़ुल्मत में रौशनी की असास

उसकी आँखें भी तरबतर होंगी
वो भी होगा मेरी तरह ही उदास

दिल ने हरगिज़ न हौंसला छोड़ा
टूट जाती रही अगरचे आस

भूल कर हम कहां ये आ पहुंचे
हमको दुनिया कभी न आई रास

रूबरू जब नहीं है उसका वजूद
साए से ख़ाक फिर बुझेगी प्यास

जब हवा में हो सरसराहट सी
ऐसे लगता है तुम हो मेरे पास

इक अजब ख़ौफ़ दिल पे तारी है
तुमको छूने से बढ़ न जाए प्यास

बारहा ख़ुद ही ज़ख्म खाए हैं
बारहा ख़ुद ही हो गए हैं उदास

कौन सी चीज़ उसकी नज़्र करूं
मेरा दिल भी नहीं है मेरे पास

पूछकर मेरा हाल ए 'अंजुम'
कर गए वो मुझे कुछ और उदास

●

वो वक़्त गया जब कहते थे दिल की हसरत को मिटाएंगे
कितने ही धोखे खाए हैं अब और न धोखे खाएंगे

वादे कितने ही किए लेकिन इस पर भी आप न आएंगे
आँखों में हज़ारों ख़्वाब लिए हम फिर भी सो ही जाएंगे

इक रात जो आंखों में काटी इक रात जो आंखों में बीती
किस तौर गुज़ारी है हमने मुश्किल से ये कह पाएंगे

मालूम नहीं था आपके दिल पर अक्सर बार गुज़रता है
ऐसा है अगर तो महफ़िल में हम इसके बाद न आएंगे

जो तेरी ज़ात ने बख़्शे हैं जो तेरी ज़ात से पाए हैं
उन ज़ख्मों को सी लेंगे हम उन अश्कों को पीं जाएंगे

कुछ तो उम्मीद रहे दिल में इतनी मायूसी ठीक नहीं
मालूम नहीं है 'ए अंजुम' किस मोड़ पे वो मिल जाएंगे

●

हम करें किसपे यक़ीं अब, के यहां सब झूठे
ये मुहब्बत, ये मुहब्बत के निशाँ, सब झूठे

कोई ऐसा नहीं मुश्किल में जो काम आ जाए
किसका हम ज़िक्र करें जाने जहां सब झूठें

हमने वो देखा है मंज़र के लरज़ जाता है दिल
इससे इन्कार नहीं एहले जहां सब झूठे

राहतें ख़्वाब सही ग़म तो हक़ीक़त है ही
बात इक सच है यही बाकी निशां सब झूठे

दिल भी अपना नहीं नाहक़ है शिक़ायत उनकी
जिस क़दर भी हों मुहब्बत में गुमां सब झूठे

ऐन मुमक़िन है कि तूफां में बदल जाएं यही
जो सफ़ीने हैं किनारों पे रवां सब झूठे

इनकी तस्वीर भी मिट जाएगी इक दिन 'अंजुम'
ये नज़्ज़ारे, के जो हैं रंगफ़शां सब झूठे

●

दिल ग़मो दर्द में घिरा ऐसे
धूप साए को ढाँप ले जैसे

जो भी लम्हा था बारे ख़ातिर था
क्या बताऊं के मैं जिया कैसे

उससे अब नामा-ओ-पयाम नहीं
वो मुझे भूल गया हो जैसे

दिल में जो चोट थी उभर आई
ठंडी-ठंडी हवा चली ऐसे

गोया ग़म का पहाड़ टूट पड़ा
हमको पेश आए हादसे ऐसे

●

आपकी मर्ज़ी है ये अच्छा ख़फ़ा हो जाइए
तोड़ कर एहदे वफ़ा को बेवफ़ा हो जाइए

कशमकश सी क्यूं है इक तरके ताल्लुक़ के लिए
जब जुदा होना ही ठहरा तो जुदा हो जाइए

ऐन मुमक़िन है के इससे भी मिले तस्कीन सी
याद करके उसको दिल में ग़मज़दा हो जाइए

उसका अक्सर पूछना ये आप आख़िर कौन हैं
जी में है उसके तग़ाफ़ुल पर फ़िदा हो जाइए

जो जफ़ा पेशा हैं उनको भी तो है शौहरत नसीब
छोड़िए रस्मे वफ़ा एहले जफ़ा हो जाइए

इसमें भी इक कैफ़ियत है, इसमें भी इक लुत्फ़ है
सबके होठों पर हो जो वो माज़रा हो जाइए

हमसे नज़रें फेर कर अब किसलिए हैं बेक़रार
आशनाई छोड़कर ना-आशना हो जाइए

क्या सबब है इसका 'अंजुम' दिल हुआ क्यूं तार-तार
दर्द को हद से बढ़ाकर ख़द दवा हो जाइए

●

उस काफ़िर से मिलना क्या
उसकी वफ़ा का चर्चा क्या
वो तो जान से प्यारा है
उसकी बात का ग़ुस्सा क्या

हम अंदर से टूट गए
उसने दिल तोड़ा क्या
उसके प्यार में हारा दिल
उससे इसका शिकवा क्या

तेरे साथ चलें हम भी
इसके क़ाबिल छोड़ा क्या
हमसे शिक़ायत करते हो
तुमने प्यार निभाया क्या ?

शेर में दिल की बात कही
ढूंढा ख़ूब बहाना क्या
दुनियां ख़ुद भी तमाशा है
देखे मेरा तमाशा क्या

अब कोई भी सोच नहीं
हमने उसको सोचा क्या

जिनको छूना मुश्किल है
उन फूलों से रिश्ता क्या

उससे मिल बैठेंगे हम
हमने अक्सर सोचा क्या

जिसके लिए कुरबान हुए
उसने हमको चाहा क्या ?

'अंजुम' जिसको छोड़ चुके
उस महफ़िल में जाना क्या

●

दिल किसी तौर शादमाँ न हुआ
वक़्त भी हमपे मेहरबाँ न हुआ

ग़म मुहब्बत का जावदां न हुआ
ये तलातुम भी बेक़राँ न हुआ

उसने कितने सवाल कर डाले
दर्द दिल का मग़र बयाँ न हुआ

ज़िन्दगी से अज़ीज़ है मुझको
एक तिनका जो आशियां न हुआ

अपना होना तो दूर की है बात
उसपे ग़ैरों का भी गुमां न हुआ

दिल में कितने ही दाग़ जलते रहे
रौशनी का कहीं निशां न हुआ

उसके दिल में था कौन सा जज्बा
उसके चेहरे से जो अयां न हुआ

आशियां भी जला दिया हमने
रौशनी का मगर गुमां न हुआ

एक शिकवा था उससे ए 'अंजुम'
लब पे आया मगर बयां न हुआ

●

उठा कर ग़म जो कोई मुस्कुराए
वो आख़िर ज़िन्दगी में जीत जाए

नहीं तशहीर के क़ायल कभी हम
जो परदे में हो उल्फ़त रंग लाए

परेशाँ सी है ये भी ज़ुल्फ़ कोई
कभी तक़दीर को सुलझा न पाए

बहारें लौट आईं हैं चमन में
ख़्यालों में वो जब भी मुस्कुराए

तड़प दिल की थी कितनी खुब लेकिन
तमाशा देखने वो आ न पाए

वो जिसकी अहमीयत हमने बढ़ाई
वो ही अब आईना हमको दिखाए

झिझक हर बात की है ख़त्म लेकिन
जो दिल की बात थी वो कह न पाए

इन्हीं ने ज़िन्दगी बख़्शी है हमको
मुहब्बत में जो नग़में गुनगुनाए

बहे जो अश्क़ तो रुसवा करेंगे
ये कोशिश कर न कोई याद आए

उसी सूरत में ये ज़ख्म बेहतर
जो बख़्शे ज़ख्म वो मरहम लगाए

निगाहों में फ़क़त है उसकी सूरत
मुहब्बत ने ये क्या मंज़र दिखाए

ये आंखें जल रहीं हैं फिर भी 'अंजुम'
किसी के वास्ते हम मुस्कुराए

●

अपनी ख़ू-ए-वफ़ा पे शर्मसार हैं हम
ऐसे लगता है कोई गुनेहगार हैं हम

अपने दम से ये फूल खिलते हैं
रौनकें हम हैं, बहार हैं हम

बागबां देखता है यूं हमको
जैसे हर फूल का सिंगार हैं हम

ग़म में डूबा है किसलिए ये दिल
जानते हैं क़रीबे यार हैं हम

रंग बदले कई ज़माने ने
अपने वादों पे बरक़रार हैं हम

कुछ भी कह दो मगर कहो तो सही
होगा जो कुछ भी जिम्मावार हैं हम

कौन अपनी नज़र का मरकज़ हैं
किसलिए इतने बेक़रार हैं हम

वो मुहब्बत कहां ज़माने में
जिस मुहब्बत के दावेदार हैं हम

दे दो अन्जाम इस कहानी को
कुछ भी सुनने को अब तैयार हैं हम

हम पे ज़ाहिर है राज़ ये 'अंजुम'
चैन उस दिल का और क़रार हैं हम

मरतबा ये भी कम नहीं 'अंजुम'
इश्क़ की राह का ग़ुबार हैं हम

●

ज़िन्दगी की हर तमन्ना इस तरह कुछ खो गई
उम्र भर के वास्ते इक बेवफ़ा की हो गई

ज़िन्दगी को क्या कहें ये हादसों में ख़ो गई
दिल भी कुछ उकता गया मैं भी परेशाँ हो गई

बारहा सोचा ये सौदा किस क़दर मंहगा पड़ा
पा लिया जब से उसे मैं अपना सब कुछ खो गई

हमने तूफ़ानों से कोसों दूर रखा था इसे
अपनी कश्ती नज़्र तूफ़ानों की आखिर हो गई

क्या कहूं आख़िर मुहब्बत मैं था कैसा मौजज़ा
ख़ुद न अपनी बन सकी लेकिन किसी की हो गई

लाख कोशिश की न फिर भी छुप सका इस दिल का हाल
उसका ज़िक्र आया तो मेरी आँख नम सी हो गई

ख़्वाब में उनसे मिले 'अंजुम' ये क्या मिलना हुआ
ख़्वाब भी तश्ना रहा उस पर सहर भी हो गई

गुनाह मुझसे हुआ ये के भूल रब से हुई
मेरी तबाही मुहब्बत में किस सबब से हुई

इसी ने दिल भी जलाया इसी ने घर मेरा
तेरे ख़्याल की शमाअ - फ़िरोज़ां जब से हुई

किसी भी चीज़ पे रुकती नहीं नज़र मेरी
तरसती आँखों को तेरी तलाश जब से हुई

इसे भी उनकी मुहब्बत की इक अदा कहिए
वो मुस्कुराए हैं मैं पायमाल जब से हुई

ज़रा सी नींद भी आए तो कुछ मिले राहत
उस एक रात की मुझको तलाश कब से हुई

बिछड़ के उसने तो जीने की दिल में ठानी थी
तड़प के रह गए ज़ाहिर ये बात जब से हुई

मक़ाम ऐसा भी आया है इश्क में 'अंजुम'
के खुद से मिल के मुलाकात अपने रब से हुई

●

जो भी हो दिल का हाल
मगर मुस्कुराइए
जितने भी ग़म हों आप उन्हें
भूल जाइए
दुनियाँ का क्या है इसका
भरोसा नहीं कोई
हरग़िज न दुनियाँ वालों की
बातों में आइए
कुछ और बढ़ न जाएं
उदासी के सिलसिले
इन मुस्कुराहटों में सभी
ग़म छुपाइए
मंजिल नहीं नसीब तो
गर्दे-सफ़र सही
आए हैं ज़िन्दगी में तो
कुछ लेते जाइए
क्या सोचते हो बढ़के ज़रा
हाथ थाम लो
इस ज़िन्दगी में साथ
किसी का तो चाहिए
जुगनु की शक्ल में ही सही
ये भी कम नहीं
तारीक रास्तों को ज़रा
जगमगाइए
माना के पेश आए
मुहब्बत में हादसे
लेकिन ज़ुबाँ पे ज़िक्र तक
उनका न लाइए
'अंजुम' उदास रह के ये
कटती नहीं कभी
ये शामे-ग़म है आस की
शमएं जलाइए

●

ख़ुद अपने ही दिल को हम बेचैन सा कर डालें
गुज़रे हुए माज़ी पर जब एक नज़र डालें

इक बार मिले जो 'वो' दिल में बड़ी हसरत है
ये बात भी कर डालें वो बात भी कर डालें

जल जाए घड़ी भर में जो चांदनी बिखरी है
जलती हुई आँखों से जब इसपे नज़र डालें

उस पर हो असर कितना यह बाद में देखेंगे
हम अपनी मुहब्बत का इज़हार तो कर डालें

इस दुनियाँ में हर मंज़र तारीफ़ के है क़ाबिल
किस-किस पे लुटाएं दिल किस-किस पे नज़र डालें

कब तक हो सफ़र जारी मालूम नहीं 'अंजुम'
दिल में ये इरादा है बुनियादे - सफ़र डालें

•

देखकर हमको मुस्कुराने की
है अदा ख़ब दिल लगाने की

आप आए ग़रीबख़ाने पर
कोई वजह तो होगी आने की

सख़्त मुश्किल में पड़ गया है दिल
कोई सूरत नहीं बचाने की

कौन जाने के ख़त्म कब होगी
उसकी आदत मुझे बनाने की

कोई सूरत वो ढूंढ ही लेगा
मेरे दिल के क़रीब आने की

●

दास्तां ये नहीं सुनाने की
इसमें है तल्ख़ियां ज़माने की

दिल के जज़बात को वो क्या समझे
जिसको आदत हो दिल जलाने की

देखना फिर नज़र चुरा लेना
सारी बातें हैं दिल दुखाने की

हम भी कोशिश करेंगे ए 'अंजुम'
यादे-माज़ी को भूल जाने की

कितने सदमें उठाए हैं 'अंजुम'
ये सज़ा पाई दिल लगाने की

●

यूं गुलिस्तां में छोड़ के जो आशियां चले
दिल में मेरे उतर के ये अब तुम कहां चले

किस काम के हसीन नज़ारे तुम्हारे बाद
ले जाओ अपने साथ इन्हें तुम जहां चले

दिल पर पड़ी वो चोट के आलम कुछ और है
दरिया की है रवानी के अश्क़े रवाँ चले

दिल का ये हाल हमसे देखा न जाएगा
दिल बार-बार पूछता है तुम कहाँ चले

बेमानी सी हैं रौनकें गुलशन की इसके बाद
हरगिज़ न ढूंढ पाओगे तुम हम जहाँ चले

जब भी ख़्याल आया भंवर से निकल चलें
मौजों ने ये सवाल किया तुम कहाँ चले

'अंजुम' कहेंगे ये न कभी दिल की दास्ताँ
दिल में छुपा के सैंकड़ों ग़म बेज़ुबाँ चले

'अंजुम' ये उनकी ज़ात में जादू है कौन सा
वो चल पड़े तो साथ कई कारवां चले

●

आओ इक दास्तां सुनाएं तुम्हें
हम तो रोए हैं अब रुलाएं तुम्हें

याद कुछ भी न अब दिलाएं तुम्हें
तुम ये कहदो के भूल जाएं तुम्हें

तुमको रुसवा न होने देंगे हम
चाहने पर भी न बुलाएं तुम्हें

और भी मुझको याद आते हो
अपने दिल से अगर भुलाएं तुम्हें

हम तो ढूढेंगे उम्र भर तुमको
ढूंढने पर अगर न पाएं तुम्हें ?

जानो-दिल के करीबतर हो तुम
फिर भला कैसे भूल जाएं तुम्हें

तुम भी दिल का सुकून खो बैठो
ऐसा कुछ हो के याद आएं तुम्हें

अपनी आंखों में अश्क़ भर लोगे
दास्तां अपनी क्या सुनाएं तुम्हें

या तो आवाज़ दो कभी हमको
या ये कहदो के भूल जाएं तुम्हें

●

उसकी अदाओं ने मेरे
दिल को लुभा लिया
बख़्शा जो उसने ग़म मेरे
दिल ने उठा लिया

अब सोचता हूं मैंने
मुहब्बत में क्या लिया
मुझसे ख़ता हुई
तुझे अपना बना लिया

दिल में कसक थी
जो किसी सूरत न छुप सकी
लेकिन जो अपना हाल था
उसने छुपा लिया

वो देखता रहा मेरी
तस्वीर ग़ौर से
देखा मुझे तो उसने
नज़र को झुका लिया

हैरत तो ये है फिर भी
हक़ीक़त न छुप सकी
चेहरे पे उसने इक नया
चेहरा लगा लिया

होती रही है बाद में
आखों से गुफ़्तगु
पहले तो उसके हाथ से
दामन छुड़ा लिया

जी चाहता है अब किसी
सूरत सुकूं मिले
इस ज़िन्दगी में हमने
बहुत दुःख उठा लिया

'अंजुम' उसे मिले हुए
सदियां गुज़र गईं
इक शख़्स जिसने मुझको
मुझी से चुरा लिया

●

वो नाम ही मिटा दिया
दिल की किताब से
राहत से वास्ता
न गरज़ इज़तराब से

तरके-ताल्लुक़ात पे भी
मुत्तमईन थे हम
इस रंग में भी
जी लिए ख़ाना-ख़राब से

वीरानियों का दौर है
उन महफ़िलों में आज
जिन महफ़िलों की शान थी
हुस्नों शबाब से

बेइख़्तियार तस्करा
उनका जो छिड़ गया
बेइख़्तियार खिल उट्ठे
दिल में गुलाब से

वो दिन भी थे निगाह में
हम थे बसे हुए
रहते थे खोए-खोए से
वो इज़तराब से

अब उसको मेरी ज़ात से
कुछ वास्ता नहीं
दिल को बड़ा सुकून मिला
उसके जवाब से

माना के आपको अभी
फ़ुरसत नहीं नसीब
फ़ुरसत में हम भी बात
करेंगे जनाब से

ये और बात उनसे
शिक़ायत न की कभी
'अंजुम' उठाए हमने सितम
बेहिसाब से

●

कम होगा बोझ दिल का तू अपने दिल को धो ले
तन्हाई से लिपट कर, बेइख़्तियार रो ले

नाराज़ हों वो हमसे हमको न था गवारा
हर बात सुन के भी हम अपनी ज़ुबां न खोले

बरसों के बाद हमको एहसास ये हुआ है
आँसू कभी हैं पानी आंसू कभी हैं शोले

मौसम ने उसको यक्सर दीवाना कर दिया था
वरना कहां था मुमकिन वो दिल के राज़ खोले

जीते हैं दूसरों की ख़ातिर वो लोग भी हैं
जिसका नहीं है कोई वो मेरे साथ हो ले

दुनिया के रंग क्या हैं दुनियां के ढंग क्या हैं
इस दौर में वफ़ा को सिक्कों के साथ तोले

जो दिल दिया है हमको उसकी है ये इनायत
वरना बहुत था मुश्किल वो दिल के राज़ खोले

दुनियाँ में नाख़ुदा को पूछेगा कौन 'अंजुम'
तूफ़ां अगर न बिफ़रे कश्ती अगर न डोले

●

जो रस्मे-दुनियां की परवाह न कोई की होती
कभी हमारे भी होठों पर इक हंसी होती

हम अपने आप से भी बेनियाज़ से रहते
तेरे ख़्याल में इतनी तो बेखुदी होती

ये आरज़ु थी कभी हम भी चैन से सोते
जो नींद अपनी किसी और ने न ली होती

थी अक़्ल हावी जुनूं पर बुरी तरह वरना
ढली जो आहों में वो रात वस्ल की होती

पड़ा था बोझ जो दिल पर वो कुछ तो होता कम
के बरसों बाद सही शक्ल तो दिखी होती

बदल ही जाते कभी ग़म हमारे खुशियों में
अगर वफ़ा के लिए यह ज़ुबां न दी होती

मज़ा कुछ और था फिर ज़िन्दगी में ए 'अंजुम'
जो दिल की दास्तां उसने कभी सुनी होती

●

तुझे जो सामने देखूं तो कुछ सहारा मिले
किसी सफ़ीने को जैसे कोई किनारा मिले

हुआ ज़माना के देखी थी जब तेरी सूरत
न जाने कब मेरी आंखों को वो नज़ारा मिले

धड़क सा जाता है दिल जब मैं आईना देखूं
के अपने चेहरे पे चेहरा मुझे तुम्हारा मिले

कभी वो वक़्त था इक दूसरे से मिलते थे
जो आंखें बंद करूं तो वो ही नज़ारा मिले

अजीब दर्द सा रहता है दिल को घेरे हुए
जो वो हो पास तो इस ग़म का कोई चारा मिले

जहां से तोड़ लूं थोड़ा सा रब्त है जो भी
कभी ख़्यालों में भी साथ जब तुम्हारा मिले

हुई हैं मुद्दतें बिछड़े थे उससे हम 'अंजुम'
हरेक लब पे मगर तस्करा हमारा मिले

●

ग़म में ख़ुशियों के हैं तराने कई
यानी, जीने के हैं बहाने कई

आपका इन्तज़ार था हमको
कट गए इस तरह ज़माने कई

उनसे नज़रें मिलीं थीं बस इक बार
और फिर बन गए फ़साने कई

ज़िन्दगी ग़म की कड़ी धूप सही
साया समझे इसे दीवाने कई

हादसों ने दिए इन्हें 'उन्वान'
जिन्दगी ने लिखे फ़साने कई

ऐसे बिछड़े के मिल न पाए फिर
बीते मौसम कई ज़माने कई

दिन को फिर भी न मिल सकी राहत
लुट गए अश्कों के ख़जाने कई

नींद से भारी उसकी आंखों ने
कहदिए अनक़हे फ़साने कई

मुस्कुरा कर भी भर जाते हैं
ज़ख्म भरने के हैं बहाने कई

बात जिसका कोई वजूद नहीं
बन गए उसके भी फ़साने कई

एक पल में ताल्लुक़ात मिटे
सरफ़ जिनमें हुए ज़माने कई

ढूंढ ही लेंगे उसको हम 'अंजुम'
उससे मिलने के हैं ठिकाने कई

●

इतनी कहानियाँ हैं क़्या-क्या तुझे सुनाऊं
गुज़री है जो भी दिल पर वो किस तरह बताऊं

उस रहगुज़र को छोड़े अब हो गया ज़माना
दिल को मगर अभी तक उन्हीं मंज़िलों में पाऊं

हरगिज़ नहीं संभलते जज़बात मेरे दिल के
मैं तेरी आहटों से कितना इन्हें बचाऊं

सूरत बदल ही जाएगी ज़िन्दगी की इक दिन
इस बेक़रार दिल को अक्सर यक़ीं दिलाऊं

तेरी हर इक अदा में पिन्हां मुहब्बतें थीं
सोचो के ऐसे दिल में सौ दायरे बनाऊं

आदत कहूं इसे या मजबूरियां है दिल की
देखूं उसे तो अक्सर मैं उसमें खो सी जाऊं

कुछ ग़म नहीं अगर वो सूरत नज़र न आए
उसके ख़्याल से भी दिल का सुकून पाऊं

पूछा है उसने 'अज़ंम' कैसे गुज़र रही है
अब अपने दिल की हालत मैं किस तरह छुपाऊं

●

कहां अब ज़माने में वो दर्द वाले
दिखाएं किसे जा के हम दिल के छाले

दिलो जां से हमको वो अपना बना ले
मगर हम कहां ऐसी तक़्दीर वाले

है ख़ामोश दुनियां में हम दर्द वाले
ज़ुबां पर न आहें न दिल में हैं नाले

मज़ा रूठ जाने का कुछ और ही है
कहे कौन उसको वो हमको मना ले

सुनाएंगे फिर उसको हम पर जो बीती
मुनासिब यही है वो अपनी सुना ले

भरोसा नहीं है ज़माने का कोई
तू अपनी निगाहों में मुझको छुपा ले

गुज़र जाएगी ज़िन्दगी रोते - रोते
जो फ़रसत मिले तो कभी मुस्कुरा ले

ज़माना तुझे ढूंढ कर ही रहेगा
ज़माने से तू लाख नज़रें बचा ले

वो बेशक छुपाएंगे दुनियां से इनको
मगर फूट निकलेंगे दिल के ये छाले

ये तेरी अमानत है तेरा रहेगा
के मैंने किया दिल को तेरे हवाले

ज़माने को हर रंग से तूने देखा
हमें भी मुहब्बत में अब आज़मा ले

तुझे हो मुहब्बत का एहसास 'अंजुम'
कभी दर्द को अपने दिल में बसा ले

●

दिल को जो हो रहा है इक हमसफ़र का धोखा
वो सामने है मेंरे या है नज़र का धोखा

तेरी जफ़ा ये मुझको है शायबा वफ़ा का
सहरा में पंछियों को जैसे शजर का धोखा

दिल में है दाग़ जितने वो मुस्कुरा रहे हैं
समझे हैं चांदनी हम ये है नज़र का धोखा

तारीफ़ के है क़ाबिल उसकी नज़र की वसुअत
वीरानियों पे जिसको है अपने घर का धोखा

बिखरे है नक़्श उसके राहों पे चार जानिब
शायद ये नक़्श भी हैं मेरी नज़र का धोखा

आया है ज़िन्दगी में ऐसा भी वक़्त 'अंज़म'
परछाईं पर हुआ है जब हमसफ़र का धोखा

आंखों में थे सजाए गो हमने सपने कितने
लेकिन रुला रहे हैं ख़ल्वत के सदमें कितने

सब कुछ गंवा के हमने था आशियां सजाया
लेकिन बिखर गए है हर सिम्त तिनके कितने

दिल से धुंआ जो उट्ठा उसके बने हैं बादल
लेकिन बरस न पाए बादल थे गहरे कितने

हम बेख़बर हैं इनसे वाक़िफ़ नहीं हैं हरगिज़
फैले हुए हैं हर सू दुनिया में किस्से कितने

यह सोचकर के उसका दिल भी न टूट जाए
हम कह सके न दिल में हैं ज़ख्म गहरे कितने

शायद कभी न आए है इन्तज़ार जिसका
इस पर भी देखती हैं आंखें ये सपने कितने

दुनियां में हमने देखा 'अंजुम' न कोई उनसा
आंखों में घूमते हैं हर वक़्त चेहरे कितने

●

अगर ग़म का ज़हराब पीना नहीं है
ये जीना तो कोई जीना नहीं है

उठाऊं मैं एहसान क्यूं चारागर के
मुझे दिल के ज़ख्मों को सीना नहीं है

न इख़लास जिसमें न रस्मे-मुहब्बत
मुझे ऐसी दुनियां में जीना नहीं है

ज़माने में वो लोग भी हैं जिन्होंने
किसी का कोई हक़ भी छीना नहीं है

यही ज़ख्म हैं यादगारे मुहब्बत
मुझे कोई भी ज़ख्म सीना नहीं है

ज़माने से मुंह मोड़ लेते नहीं क्यूं
अगर आपको रास जीना नहीं है

कसक सी है आठों पहर दिल में 'अंजुम'
के इस हाल में हमको जीना नहीं है

दिल उसको ढूंढता रहता है
इक समां बंधा सा रहता है

क्या दिन थे जब वो मेरा था
दिल अक्सर सोचता रहता है

ख़्वाबों का हर इक रंग-महल
बन-बन कर मिटता रहता है

गुज़रे लम्हों को याद न कर
ये दिल समझाता रहता है

दुनियां में कोई नहीं अपना
इन्सान बदलता रहता है

ये वक्त नहीं, इक आलम में
हर लम्हा बदलता रहता है

तू भी खुश रख खुद को 'अंजुम'
जैसे वो हंसता रहता है

●

कोई याद आ गया है
मेरी आँख जो भर आई
रूठा है मुझसे क्या वो
रूठी है ये ख़ुदाई

मेरे सामने है मंज़िल
नज़रें भटक रही हैं
क्या जाने किस क़लम से
तक़्दीर है लिखाई

जिसकी उम्मीद पर थी
ये सल्तनत बसाई
उसे दिल के टूटने की
आवाज़ तक न आई

मुझको पुकार आख़िर
ये चुप सी क्यूं लगी है
मैंने उम्मीद की है
शम्अ सी इक जलाई

कोई साथ ले गया है
मेरी मुस्कुराहटों को
मुझे इल्म है ये किसने
मेरी हंसी चुराई

इसी कशमकश में आख़िर
इक उम्र कट गई है
कभी दिल तड़प सा उट्ठा
कभी आंख भर सी आई

महसूस हो रहा है
दिल जानता है उसको
रहे-ज़िन्दगी में किसने
आवाज़ ये लगाई

इक-इक क़दम पे हमने
सौ ग़म उठाए 'अंजुम'
उसे क्या ख़बर के क्यूंकर
ये ज़िन्दगी बिताई

हरेक हादसा दिल से भुला गया है जुनूं
हुनर वफ़ा के भी मुझको सिखा गया है जुनूं

चिराग़ हों ऐसी तो कोई बात नहीं
फ़रोग़े मय से ये चेहरा सजा गया है जुनूं

मुझे ख़बर नहीं दुनियाँ की, ये हक़ीक़त है
तेरी निगाह में ऐसे बसा गया है जुनूं

करम हो उसका, तग़ाफुल हो, सब क़बूल मुझे
किसी की ज़ात में ऐसे सजा गया हे जुनूं

जहान भर में कोई वफ़ा परस्त नहीं
अजब करिश्मे वफ़ा के दिखा गया है जुनूं

न मेरी ज़ात पे अब नुक़्ताचीनीयां उसकी
किसी को आईना ऐसे दिखा गया है जुनूं

हज़ार वहम थे दिल में जो मिट गए "अंजुम"
के दिल को ऐसा तमाशा दिखा गया है जुनूं

●

बिखरी रेत थी जब साहिल पर
क्या कहिए क्या गुज़री दिल पर

दिल ने चाहा नाम लिखें हम
नाम उसके पैग़ाम लिक्खें हम

जब हाथों ने कुछ हरकत की
अक़्ल ने दिल पर इक दस्तक दी

दिल ने समझा जिसको अपना
वो था बीते कल का सपना

दिल शायद नादान बहुत है
क्या कहिए, हैरान बहुत है

अक़्ल न इसकी बात में आए
कोई न इसका साथ निभाए

इससे जुनूं भी हुआ सवाली
इसकी हर इक बात ख़्याली

धड़कता है उसके पाने को
तरसता है उसके पाने को

हमसे उलझता रहता है ये
अपनी कहानी कहता है ये

इसकी हर इक बात में दम है
नाज़ुक से जज़्बात में दम है

इससे जहां का दूर अंधेरा
ग़म की रातों का ये सवेरा

●

तुम साज़ हो मेरे गीतों का
मेरे गीतों की सरगम हो

गाहे यादों का शोला हो
गाहे यादों की शबनम हो

इस ख़ामोशी से ज़ाहिर है
वो पहले जैसी बात नहीं

हर वक़्त ख़फ़ा से रहते हो
किस बात पे आख़िर बरहम हो

हर वक़्त समाए रहते हो
इस दिल में तुम धड़कन की तरह

फिर मुझको यक़ीं आए क्यूंकर
तुम मुझसे ख़फ़ा हो बरहम हो

इक तुमको पाने की ख़ातिर
सारी दुनियां को ठुकराया

मैं फूल हूं इक मुरझाया सा
तुम उस पर बिखरी शबनम हो

मैं इक चंचल सी नदी हूं
तुम एक समन्दर गहरा सा

मुझको होना है जज़्ब जहां
जाकर तुम ऐसा संगम हो

अब रुसवाई का डर कैसा
जब दिल से तुझको चाहा है

शायद ये तुम्हें मालूम नहीं
मैं नग़मा हूं तुम सरगम हो

ऐसा भी हुआ हे रोने से
ये दिल कुछ हल्का हो न सका

वो आंखें फिर भी जलती हैं
जिन आँखों की तुम शबनम हो

ग़म से तस्कीन सी मिलती है
राहत से नहीं कुछ भी हासिल
सीने से लगा रखा है जिसे
तुम इस दिल का ऐसा ग़म हो

कितना महरूम-ए तमन्ना हैं तुझे क्या मालूम
कोई किस दर्जा प्यासा है तुझे क्या मालूम

ज़िन्दगी की तुझे रंगीनीयां मिल जाएंगी
दिल परेशान ये कितना है तुझे क्या मालूम

तेरे होठों पे तब्बस्सुम की लकीरें हैं मदाम
दिल में जो दर्द सा उट्ठा है तुझे क्या मालूम

तुझको क्या इल्म के किस हाल में हम जीते हैं
ज़िन्दगी एक तमाशा है तुझे क्या मालूम

तुझको फ़ुरसत ही कहाँ मेरी हिक़ायत जो सुने
दिल में क्यूं शोर सा बरपा है तुझे क्या मालूम

तेरा एहसास तेरे प्यार का पैकर बनकर
मेरे जज़बात पे छाया है तुझे क्या मालूम

अपनी मजबूरियाँ ज़ाहिर भी करें तो क्युंकर
दिल पे जो ज़ब्त का पहरा है तुझे क्या मालूम

उसके मासूम से चेहरे की उदासी 'अंजुम'
दिल यह क्यूं देख के तड़पा है तुझे क्या मालूम

●

रात ढली है लम्हा - लम्हा
दिल को किया है कितना तनहा

हिज्र की रातें कटेंगी कैसे
तन्हाई में कटे न लम्हा

कटने को तो रात कटी है
सुबह का तारा फिर भी है तनहा

कितनी जल्दी गुज़र गया वो
प्यार में गुज़रा जो भी लम्हा

मुझको आया था बहलाने
किया है मुझको और भी तन्हा

वो बदली की सूरत बरसा
बह गया इसमें इक-इक लम्हा

तेरी याद में शमए-मुहब्बत
जलती जाए तन्हा - तन्हा

जो गुज़रा तेरी कुरबत में
कहाँ से लाएं अब वो लम्हा

ये उसकी हिम्मत है 'अंजुम'
उसने सहे सारे ग़म तनहा

●

सुधा की शायरी ग़ज़ल की शायरी है और इस शायरी पर दाग़ असकूल की ग़ज़ल गोई का ख़ासा असर नज़र आता है। लेकिन दाग़ असकूल की ग़ज़ल अक्सर व बेशतर रिन्दी और हवसनाकी के दामन में जाकर पनाह लेती है इसके बरअक्स सुधा अंजुम की शायरी इस ऐब से अक्सर खाली है। सुधा अंजुम का तख़य्युल एक हिन्दुस्तानी औरत का तख़य्युल है और पाकीज़गी का एहसास इस तख़य्युल की मैराज है।

प्रोफ़ैसर जगन्नाथ आज़ाद
शोअबा उर्दू
जम्मू यूनिवर्सिटी